विष्णु के दशावतारों की कथाओं का राजस्थानी लोक एवं शास्त्रीय चित्रण

डॉ0 प्रीति गुप्ता
असि0 प्रोफे0, चित्रकला विभाग
एच0वी0एम0 पी0जी0 कॉलेज, रायसी, हरिद्वार
Email: agawalpreeti@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 प्रीति गुप्ता

विष्णु के दशावतारों की कथाओं का राजस्थानी लोक एवं शास्त्रीय चित्रण

Artistic Narration 2019, Vol. X, No. 2, pp.154-164

http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

राजस्थान धार्मिक क्षेत्र रहा है। बिना भगवद्भक्ति के यह संसार रसहीन एवं निरर्थक है। भक्ति की शक्ति अपरम्पार है, वह अपरिमित और अवर्णित है। भगवान अपने भक्तों की रक्षा एवं दुष्टों का संहार करने के लिए अनेक लीलाएं रचते हैं, जो मनुष्य को प्रतिपल नवचेतना और प्रेरणा देती रहती है। भगवान की लीलाओं और धार्मिक कथाओं के कथन, श्रवण और दर्शन का पुण्य मिलता है।

राजस्थानी चित्रकार ने भी अपनी कूंची से धार्मिक अवतारों का चित्रण करके स्वयं को एवं जनमानस को पुण्य का भागीदार बनाया। भगवान के दिये गये प्रयोजनों को पूरा करके मनुष्य लोभ, मोह, वासना, तृष्णा इत्यादि बंधनों से परे हो सके और दुष्प्रवृत्तियों एवं दुर्भावनाओं पर विजय प्राप्त कर जीवन को उत्कृष्ट, आदर्शवादी एवं धर्मपरायण बना सके यही इन अवतारों का लक्ष्य है। इसी भावना के संचार हेतु राजस्थान में इन अवतारों का चित्रण एक विशेष महत्व रखता है। ये चित्र लघु चित्रों, भित्ति चित्रों, पड़ चित्रों, कांवड़, थापे आदि पर प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। लघु चित्रों में तो एक ही विषय को एक चित्र फलक पर मुख्यतः अंकित किया जाता है परन्तु पड़ में तो गणेश जी और प्रमुख अवतारों का चित्रण एवं प्रमुख कथा एक ही चित्रफलक पर चित्रित होती है। इन सब चित्रों के पीछे भगवत कृपा का भाव छिपा रहता है।

प्रस्तावना

राजस्थान धार्मिक क्षेत्र रहा है। बिना भगवद्भक्ति के यह संसार रसहीन एवं निरर्थक है। भक्ति की शक्ति अपरम्पार है, वह अपरिमित और अवर्णित है। भगवान अपने भक्तों की रक्षा एवं दुष्टों का संहार करने के लिए अनेक लीलाएं रचते हैं, जो मनुष्य को प्रतिपल नवचेतना और प्रेरणा देती रहती है। भगवान की लीलाओं और धार्मिक कथाओं के कथन, श्रवण और दर्शन का पुण्य मिलता है।

राजस्थानी चित्रकार ने भी अपनी कूंची से धार्मिक अवतारों का चित्रण करके स्वयं को एवं जनमानस को पुण्य का भागीदार बनाया। भगवान के दिये गये प्रयोजनों को पूरा करके मनुष्य लोभ, मोह, वासना, तृष्णा इत्यादि बंधनों से परे हो सके और दुष्प्रवृत्तियों एवं दुर्भावनाओं पर विजय प्राप्त कर जीवन को उत्कृष्ट, आदर्शवादी एवं धर्मपरायण बना सके यही इन अवतारों का लक्ष्य है। इसी भावना के संचार हेतु राजस्थान में इन अवतारों का चित्रण एक विशेष महत्व रखता है। ये चित्र लघु चित्रों, भित्ति चित्रों, पड़ चित्रों, कांवड़, थापे आदि पर प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। लघु चित्रों में तो एक ही विषय को एक चित्र फलक पर मुख्यतः अंकित किया जाता है परन्तु पड़ में तो गणेश जी और प्रमुख अवतारों का चित्रण एवं प्रमुख कथा एक ही चित्रफलक पर चित्रित होती है। इन सब चित्रों के पीछे भगवत कृपा का भाव छिपा रहता है।

अवतार चित्र

अधर्म का नाश व धर्म का स्थापना हेतु भगवान स्वयं इस पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।[1] वह परमात्मा स्वयं अपनी माया से अनेक रूपों को धारण करता है। अवतार प्रयोजन को दर्शात हुये भगवान वेदव्यास ने लिखा है–

''मत्सविवतारस्तियह मर्त्यशिक्षणं रेखावधाये वे न केवलं विभोः।। [2]

भगवान के चौबीस अवतार हैं जिसमें दशावतार तो अत्यन्त प्रसिद्ध हैं–

''मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नृसिंहो वामनस्तथा।
रामो रामाश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्कि दर्श स्मृतः।। [3]

इन अवतारों में भगवान ने किसी विशेष जाति, वर्ण या योनि को नहीं चुना है उन्होंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, पशु व अनेक विचित्र रूपों में अवतरण किया। प्रभु के इन अवतारों को धारण करने का उद्देश्य यही है कि प्रभु की अवतार लीलाओं से मुनष्य यही प्रेरणा ग्रहण करे कि वह आन्तरिक तथा बाह्य जगत में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की स्थापना के लिये प्रभु जैसा अनवरत श्रम करें।

राजस्थान में अवतारों का न केवल वर्णन, श्रवण ही होता है अपितु चित्रण भी होता है। वहाँ पर प्रत्येक शुभकार्य से पूर्व प्रभु रूप का स्मरण करते हैं। पड़ चित्रण के समय ही पहले गणेश तथा भगवान के दशावतार का चित्रण करने के पश्चात कथावस्तु प्रारम्भ करते हैं। इनके अतिरिक्त लघु चित्र भी बहुतायत की संख्या में प्राप्त होते हैं जो अवतारों पर आधारित हैं। काँवड़ में भी भगवान की लीलाओं को चित्रित करते हैं। इन अवतारों की कथा व चित्र प्रायः लोक मुख से श्रवित व लोक में चित्रित प्राप्त होते हैं।

इन अवतारों की कथा तो विस्तृत रूप से पुराणों में प्राप्त होती है। परन्तु यहाँ पर संक्षिप्त रूप

में लोकमुख द्वारा श्रवित कथा राजस्थानी लोक एवं शास्त्रीय चित्रण के साथ प्रस्तुत है–

मत्स्यावतार

मत्स्यावतार प्रभु का प्रथम अवतार है। इसकी कथा संक्षिप्त[4] में इस प्रकार है–

राजा मनु प्रलय के समय सृष्टि को बीज रूप से और सप्तऋषियों को बचाये रखने के उद्देश्य से तपस्या कर रहे थे। वे स्नान के लिये गये तो जलाशय में एक छोटी मछली निकली उसने मनु से प्रार्थना की कि ''मुझे किसी बड़े जलाशय में पहुँचा दे जहाँ में सुखपूर्वक रह सकूँ'' मनु ने उसे वहाँ पहुँचा दिया। मछली वहाँ बढ़ी और इतनी बढ़ी कि स्थान कम पड़ गया। उसने मनु से फिर प्रार्थना की कि ''आप मेरी सहायता कीजिये और अन्यत्र किसी बड़े जलाशय में पहुँचा दीजिये।'' मनु की करुणा जागी और परोपकारवृत्ति से उसने मछली को बड़े जलाशय में पहुँचा दिया। वहाँ भी उसका आकार बढ़ा, मछली की प्रार्थना पर मनु ने क्रमशः बड़े जलाशयों में पहुँचाते–पहुँचाते अन्त में समुद्र में पहुँचा दिया। मछली ने जब अपने विस्तार से सम्पूर्ण समुद्र घेर लिया, तब मनु ने उसे भगवान का अवतार समझा और उनसे अपने वास्तविक रूप में दर्शन देने के लिये प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर मत्स्यावतार भगवान ने मनु को अपने दर्शन दिये।

मत्स्यावतार भगवान के कई चित्र प्राप्त होते हैं जो पड़ चित्रों में रामदला की पड़ में, देवनारायण और पाबूजी की पड़ में भगवान मत्स्य अवतार के चित्र दिखाई देते हैं इन चित्रों में मत्स्य नीली रंग की तथा उसके मुख में भगवान विष्णु को चित्रित किया जाता है। भगवान के वर्ण में नारंगी रंग तेज युक्त तथा वेशभूषा लाल होती है। ये चित्र लोकशैली में बनते हैं। इनके अतिरिक्त लघु चित्रों में भी मत्स्यावतार के चित्र बने हैं। जिसमें विराट रूप में मछली बनाई गई है तथा उसमें अवस्थित चतुर्भुजधारी भगवान विष्णु हैं जो श्याम वर्ण में हैं तथा जिनका मुकुट सुनहरा है तथा उन्होंने मुक्ताभूषण धारण कर रखे हैं व हाथों में शंख, चक्र, गदा है।

पृष्ठभूमि में हल्का हरा आकाश तथा ऊपर से सलेटी तथा मध्य से नारंगी है। समुद्र सफेद तथा कत्थई है, कहीं–कहीं कमल के फूल भी बनाये गये हैं। मछली में अलंकरण बनाया गया है।

सम्पूर्ण चित्र अत्यन्त सुन्दर हैं। यह चित्र सचित्र ग्रंथ का है तथा जोधपुरी शैली में चित्रित है। इसके अतिरिक्त एक और ग्रंथ चित्र प्राप्त होता है जिसमें मत्स्य व कच्छप दो अवतार एक पृष्ठ पर है बायें आधे पृष्ठ में मत्स्यावतार है।

इस चित्र में मछली को धूमिल कत्थई रंग से बनाया गया है। जिस पर काले रंग से डिजाइन बनाई गई है। इसी भाँति समुद्र में भी सफेद धूमिल रंग भरकर ऊपर लहरें बनाई गई हैं। समुद्र लहरों, कमल पुष्पों व पत्रों से अलंकृत है। भगवान विष्णु को चतुर्भुज रूप में मत्स्य के मध्य में अवस्थित किया गया है। भगवान की चार भुजाओं में पुष्प, शंख, चक्र और गदा है। भगवान श्याम वर्ण में चित्रित हैं तथा दुपट्टा और धोती लाल–नारंगी है। भगवान अलंकरणों से सुशोभित हैं। पृष्ठभूमि पीली तथा आकाश नीला है। यह सम्पूर्ण चित्र 6×7 इंच का है परन्तु मत्स्य भगवान का आधा चित्र 6 इंच×3.5 इंच का है। इन चित्रों में भगवान विशाल रूप में हैं।

मनु को दर्शन देने के पश्चात प्रभु अन्तर्ध्यान हो गये तथा मनु भी अपना जीवन व्यतीत करने लगे। प्रलय के निश्चित समय आने पर मनु ने एक नौका में सृष्टि के बीजों को तथा सप्तऋषियों को बैठा लिया था। तब नाव डूबती देखकर भगवान मत्स्य प्रकट हुये और उन्होंने उसे अपने शरीर में बाँधकर बचाया।

मत्स्य पुराण की कथा के अनुसार एक बार हयग्रीव असुर ब्रह्मा के सो जाने पर वेदों को चुराकर ले गया और समुद्र में जा छिपा तब भगवान मत्स्य उन्हें खोजकर हयग्रीव से लाये और वेदों का उद्धार किया।[5]

कच्छप अवतार[6]

देवासुर संग्राम में असुरों के जीत जाने पर पराजित देव भगवान विष्णु के पास आये। विष्णु ने देवताओं को प्रेरणा दी कि तुम यदि अपना कल्याण और सर्वत्र सुख, समृद्धि चाहते हो तो असुरों के साथ मिलकर सामूहिक पुरुषार्थ करो अर्थात समुद्रमंथन करो। इस बात पर असुर भी तैयार हो गये और समुद्रमंथन की तैयारी होने लगी। मंथन के लिये मन्दराचल पर्वत को मथानी (रई) और वासुकि नाग की नेति (रस्सी) बनाया गया।

मन्दराचल के नीचे कोई आधार नहीं था इसलिये वह समुद्र में डूबने लगा और समुद्र मंथन का कार्य रुक गया।

तब भगवान विष्णु ने कच्छप का रूप धारण करके मन्दराचल को अपनी पीठ पर उठा लिया और इस दृश्य के अनेक चित्र प्राप्त होते हैं परन्तु अकेले कच्छप अवतार रूप में एक ग्रन्थ चित्र प्राप्त होता है। इस चित्र में नीचे कच्छप भगवान हैं जिन्होंने अपनी पीठ पर मन्दराचल धारण कर रखा और ऊपर कमल पुष्प में स्वयं भगवान विष्णु को चित्रित किया गया है। जो चतुर्भुज रूप में श्यामवर्णी तथा पीत वस्त्रों से सुशोभित हैं। मन्दराचल गुलाबी व लाल तथा कच्छप पीले व सफेद रंग से बना है। नीचे समुद्र है जिसमें पुष्प व पत्र हैं। पृष्ठभूमि हरी व आकाश नीला है। समुद्र के पीछे पृष्ठभूमि में घास व झाड़ियाँ भी बनाई गई हैं। देवनारायण, पाबूजी, कृष्णदला, रामदला की पड़ में भी यह अवतार चित्रित हुआ है। इस प्रकार कच्छप के मन्दराचल पर्वत उठाने पर फिर से समुद्र मंथन प्रारम्भ हो जाता है। समुद्र मंथन के चित्रों में कच्छप अवतार को कच्छप रूप में चित्रित किया जाता है। अन्य चित्रों में तो भगवान कच्छप रूप हैं मन्दराचल के ऊपर कमल पुष्प में बैठे हैं परन्तु चित्र में भगवान का शरीर कच्छप रूप में ही है व हस्त, पैर तथा मुख मानव रूप में चित्रित किया गया है। जो नारंगी रंग से चित्रित है। समुद्र मंथन में कच्छप अवतार दृढ़–संकल्प का प्रतीक है।

वाराहवतार[7]

शतपथ ब्राह्मण व अथर्ववेद के अनुसार पहले प्रदेश मात्र भूमि का आर्विभाव हुआ था जिसका उद्धार श्री वाराह भगवान ने किया था। ''उद्धृतासि वराहे व कृष्णेन यज वाहुना।

अर्थात जल मग्न सृष्टि को देखकर ब्रह्मा जी ने विचार किया कि पृथ्वी अवश्य ही इस जल के अन्दर है। इसे बाहर निकाला जाये इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु भगवान ने वाराह रूप धारण करके पृथ्वी का उद्धार किया।

परन्तु भागवत कथा के अनुसार जय और विजय नामक विष्णु के द्वारपालों को सनकादि ऋषि ने शाप दिया जिससे वह हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु दो शक्तिशाली असुर बन गये। हिरण्याक्ष ने अपनी शक्ति से पृथ्वी पर अधिकार कर लिया और वह उसे रसातल में ले गया। तब विश्णु भगवान ने वाराह अवतार धारण करके हिरण्याक्ष का वध कर दिया तथा पृथ्वी को पुनः उसके नियत स्थान पर पहुँचा दिया। वाराह अवतार के कई चित्र प्राप्त होते हैं जिसमें देवनारायण, पाबूजी, कृष्णदला आदि की पड़ के अतिरिक्त सचित्र ग्रंथ चित्रों में भी वाराह अवतार का चित्रण प्राप्त होता है।

इन चित्रों के अतिरिक्त दो चित्र प्राप्त होते हैं जिसमें से एक चित्र भित्ति चित्र है जो मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर के फूल महल की छत पर है। इस चित्र के चारों ओर सुनहरे रंग का अलंकरण है तथा मध्य में समुद्र के अन्दर वाराह भगवान पृथ्वी को धारण किये हुये चित्रित हैं नीचे हिरण्याक्ष असुर है जिस पर भगवान ने अपना पैर रख रखा है। भगवान चतुर्भुज रूप में तथा श्याम वर्ण में चित्रित हैं। उन्होंने स्वर्ण के आभूषण व मुक्ताभूषण धारण कर रखे हैं। पृष्ठभूमि में समुद्र तल तथा ऊपर समुद्र है। इस चित्र के अतिरिक्त अन्य ग्रंथ चित्र में भगवान समुद्र में हैं। हिरण्याक्ष को सफेद रंग से चित्रित किया गया है। समुद्र में लहरें बनायी गई हैं व पीछे फूल युक्त झाड़ियाँ हैं। पृष्ठभूमि लाल है भगवान वाराह पृथ्वी को अपने

दाँत पर उठाये हुये हैं तथा हिरण्याक्ष का वध करते हुये चित्रित हैं पृथ्वी पर झोंपड़ी, महल तथा वृक्ष आदि हैं। इस चित्र में आकाश नीला है। यह चित्र सुन्दर बना है तथा बीकानेर शैली का प्रतीत होता है।

नृसिंह अवतार[8]

भागवत कथा के अनुसार जब हिरण्याक्ष का वध हो गया तब हिरण्यकशिपु और अधिक उग्र हो गया उसने देवताओं को परास्त कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। सभी देवता भगवान विष्णु के पास पहुँचे और अपनी व्यथा कही। विष्णु ने कहा जब यह धर्म, वेद और अपने धर्मात्मा पुत्र पर अत्याचार करेगा तब मैं इसका वध करूँगा। उधर हिरण्यकशिपु तपस्या करके ब्रह्मा से वरदान पाकर और अधिक बलशाली व स्वयं को भगवान समझने लगा क्योंकि वरदान स्वरूप उसे न तो कोई नर मार सकता था ना पशु, ना दिन में ना रात में, ना अन्दर न बाहर कोई नहीं मार सकता था।

हिरण्यकशिपु का प्रह्लाद नामक पुत्र था जो भगवान की शक्ति में अटूट श्रद्धा रखता था तथा अन्य असुर बालकों को भी भगवत भक्ति का उपदेश देता था। इस पर हिरण्यकशिपु अत्यन्त कुद्ध हुआ और उसने प्रह्लाद को मारने के लिये अनेक यत्न किये। हाथी के नीचे कुचलवाया, पर्वत से गिरवाया, भोजन में विष मिलाया, विषधर सर्पो से कटवाया, अग्नि में डलवाया परन्तु हर बार प्रह्लाद को जीवित देखकर वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और उसे मारने को खड़ग लेकर दौड़ा। उसने कहा ''अपने भगवान को बुलाओ वह तुम्हारी कैसे रक्षा करता है।'' यह कहकर खंभे पर प्रहार किया खंभे से नृसिंह भगवान प्रकट हो गये और हिरण्यकशिपु को अपने उरु (जाँघ) पर रखकर नाखूनों से चीर दिया। हिरण्यकशिपु को चीरते हुये नृसिंह अवतार के कई चित्र प्राप्त हुये हैं। जिनमें कुछ भित्ति चित्र, कुछ लघु चित्र, ग्रंथ चित्र, काँवड़ चित्र व पड़ चित्र हैं। काँवड़ चित्रांकन में नृसिंह भगवान हिरण्यकशिपु का वध कर रहे हैं। समीप ही एक श्यामवर्णी पुरुषाकृति है। नृसिंह भगवान को पीले रंग से बनाया गया है तथा हिरण्यकशिपु गौर वर्ण का है परन्तु पड़ चित्रों में हिरण्यकशिपु को नीला चित्रित किया गया है।

इन चित्रों के अतिरिक्त भित्ति चित्र में भगवान उच्च सिंहासन पर बैठे हैं तथा गोद में कत्थई रंग में हिरण्यकशिपु को अपने नाखूनों से चीर रहे हैं समीप ही प्रह्लाद तथा एक अन्य स्त्री खड़ी है अग्रभूमि में सुन्दर पुष्पयुक्त गलीचा बिछा है तथा पीछे बहुत सारे वृक्ष खड़े हैं आकाश बादलों से आच्छादित है अतः संध्या समय का आभास हो रहा है। यह चित्र अण्डाकार आकार में है।

ग्रंथ चित्रों में एक चित्र में नृसिंह भगवान अत्यन्त क्रोध से युक्त महिषासुर का वध कर रहे हैं। उनके हाथों से लहू टपक रहा है। पृष्ठभूमि हल्की जामुनी है तथा आकाश नीला है। यह चित्र अत्यन्त सुन्दर बना हुआ है। एक अन्य चित्र भी इसी स्थिति का प्राप्त होता है उसमें धूमिल रंगों का प्रयोग है। इस चित्र में महिषासुर को एक बालक की आकृति जैसा चित्रित किया गया है। जिसके मुख पर शान्त भाव प्रदर्शित हो रहा है परन्तु नृसिंह भगवान क्रोध युक्त दिखाये गये हैं। उनके बायें हाथ में रक्त धारा है। इसके अतिरिक्त एक अन्य चित्र में भी भगवान नृसिंह हिरण्यकशिपु का वध कर रहे हैं इस चित्र में हिरण्यकशिपु का शीश हिरन का व शरीर मनुष्य का है। समीप ही शेषनाग, इन्द्र, शिव, लक्ष्मी जी खड़े हैं। एक किनारे पर प्रह्लाद खड़ा है। इन आकृतियों के पास लिपि में नाम लिखे हुये हैं। पृष्ठभूमि हरी व आकाश सफेद तथा नीले बादलों युक्त है। एक अन्य चित्र में भगवान नृसिंह पर अप्सरायें पुष्प वर्षा कर रही हैं व समीप ही देवगण खड़े हैं।

वामन अवतार[9]

राजा बलि के पास प्रचुर धन सम्पत्ति थी वह तीनों लोकों का अधिपति था यद्यपि यह राजा धार्मिक प्रवृत्ति का था तथापि भगवान ने विचार किया कि सम्पूर्ण धन एक जगह एकत्रित हो जाये तो उसका परिणाम दुखदायक होगा इसलिये भगवान ने धन विकेन्द्रीकरण हेतु राजा बलि की दान भावना व सहृदयता का उपयोग किया।

भगवान ने अदिति के गर्भ से वामन रूप में जन्म लिया और विरोचन पुत्र बलि के पास दान याचना हेतु गये। राजा बलि ने उनका स्वागत किया व उनके पैर पखारे तत्पश्चात वामन ने दान स्वरूप तीन पग भूमि माँगी जिसे राजा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसी दृश्य को अभिव्यक्त करते अनेक चित्र मिले हैं। इन चित्रों में राजा बलि सिंहासन पर अपनी पत्नी के साथ बैठा हुआ एक पात्र से सामने खड़े वामन को गंगाजल से तीन पग भूमि का वचन दे रहा है। राजा ने लाल जामा, मुक्ता व पुष्पमाला तथा अलंकरण धारण कर रखे हैं। समीप ही पीला घाघरा और काली ओढ़नी पहने उसकी पत्नी है। नीचे बांयी ओर कोई ऋषि बैठा है। नीचे सफेद पुष्पयुक्त गलीचा है तथा पृष्ठभूमि हरी है। राजा अपने भवन में बैठा है जिसमें पीछे जाली व अलंकरण हैं तथा पृष्ठभूमि में नीचे पुष्पयुक्त झाड़ियाँ हैं। एक अन्य चित्र में भी इसी प्रकार का दृश्य है पर वामन भगवान के पीछे प्रकाश–पुंज व सिर पर छत्र है राजा के पीछे भी प्रकाश–पुंज बना है। पृष्ठभूमि पीली व हरी मिश्रित सी है। आकाश नीला व लहरदार लटके हुये बादलों से युक्त है। अग्रभूमि सफेद है। राजा रानी के पीछे एक राज व्यक्ति खड़ा है। अलवर शैली में बने एक चित्र में राजा साधारण वेश में है उसकी रानी भी समीपस्थ है सामने प्रकाश–पुंज युक्त भगवान वामन हाथ में कटोरा लिये दान याचना कर रहे हैं तथा दायीं ओर एक तपस्विनी व एक तपस्वी बैठे हैं। नीचे अलंकृत गलीचा है व सामने सुन्दर जालियाँ हैं। ऊपर मयूर युग्म है व नीचे मुंड़ेर पर एक मोरनी बैठी है। पृष्ठभूमि में सुन्दर वृक्ष है तथा आकाश लाल व नीला है व सफेद बादलों से आच्छादित है। परन्तु अन्य

चित्र में राजा बलि अकेले बैठे हैं व उनके समक्ष वामन खड़ा है। पृष्ठभूमि हरी है तथा आकाश आसमानी व हल्का नारंगी मिश्रित है। इस चित्र में राजा ऊँचे संदूकनुमा आसन पर बैठा है पीछे लाल मसनद है। इस प्रकार राजा बलि से वामन तीन पग भूमि दान स्वरूप प्राप्त कर लेता है।

अकस्मात वामन विराट रूप में प्रकट होकर एक पग से धरती, आकाश व दिशायें तथा दूसरे पग से स्वर्गलोक नाप लेते हैं। तब वह राजा से तीसरे पग के लिये स्थान मांगते हैं। इस पर राजा अपना शीश झुका देते हैं कि यही आपके तीसरे पग के लिये उचित स्थान है। यह कहकर अपना सर्वस्व दान कर दिया।

इस प्रकार परमार्थ, लोक–कल्याण के लिये राजा बलि ने तीनों लोकों का राज व प्रचुर धन तथा स्वयं को भी ईश्वर के समक्ष अर्पण कर दिया।

परशुराम अवतार[10]

त्रेतायुग में सहस्रबाहु नामक प्रचण्ड शासक था जिसकी दो भुजायें ही सहस्र भुजाओं के समान थी। एक बार राजा परशुराम के पिता जमदिग्न के आश्रम में सहस्रबाहु वन में भटकते हुये पहुँच गया। तब ऋषि जमदग्नि व उनकी पत्नी रेणुका ने राजा के योग्य व्यंजन कामधेनु द्वारा प्राप्त करके राजा को खिलाये। राजा इन व्यंजनों से प्रसन्न हुआ और ऋषि से कामधेनु माँग ली। ऋषि ने इंकार किया तो वह बलपूर्वक ले गया। जब परशुराम आश्रम आये तो घटना जानकर क्रोध में भरकर सहस्रबाहु से युद्ध किया। सहस्रबाहु से युद्ध करने के अनेक चित्र प्राप्त होते हैं। एक चित्र में श्यामवर्ण परशुराम सहस्रबाहु राजा से युद्ध करते हुये चित्रित किये गये हैं। यह चित्र जोधपुरी विशेषताओं से ओत–प्रोत है जैसे–अरुणाभ बड़ी आँखें, आगे को निकली हुई नासिका, वस्त्राभूषण तथा लाल बाह्य किनारी तथा पीले, हरे व नीले रंगों का योग। पृष्ठभूमि हरी है तथा टीले बने हुये हैं। आकाश श्वेत तथा उन पर लटकते गोल कंगूरे युक्त नीले बादल चित्रित हैं। नीचे अग्रभूमि में पट्टीयुक्त पृथ्वी है व पीछे झाड़ी है एक अन्य चित्र में गौरवर्णी परशुराम सहस्रबाहु से युद्ध कर रहे हैं। पृष्ठभूमि पीली व हरी है, ऊपर नीला कंगूरेदार बादलों से युक्त आकाश है। यह चित्र भी जोधपुरी शैली का है।

सहस्रबाहु से युद्ध करते हुये परशुराम ने सिर काटकर सहस्रबाहु को मार दिया व कामधेनु वापस ले आये। सहस्रबाहु के पुत्रों ने पिता की हत्या का बदला लेने के लिये परशुराम की अनुपस्थिति में जमदग्नि का वध कर दिया। परशुराम ने जब पितृ हत्या का समाचार सुना तो, क्रोधवश क्षत्रियों के अत्याचारों से पृथ्वी का भार उतारने के लिये उद्यत हो गये। उनका परशु प्रचण्ड तेज से देदीप्यमान हो गया। उन्होंने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियविहीन कर दिया तथा अनीति युक्त शासन से प्रजा को मुक्त करके 'धर्म–राज्य' की स्थापना की।

भगवान परशुराम अवतार को पड़ में अवतार रूप चित्रित किया जाता है। पाबूजी की पड़ में वह परसा लिये खड़े हुये बनाये जाते हैं। एक अन्य चित्र में भगवान का परसा तेज से दीप्तिमान चित्रित किया गया है। इस चित्र में भगवान परशुराम का शान्त चेहरा, गौर वर्ण, स्वर्ण व मुक्ताभूषण पहने तथा बायें हाथ में तलवार, बगल में ढाल, सफेद रूपट्टा, लाल धोती पहने चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि हल्की हरी है व आकाश धूमिल तथा नारंगी, पीले रंग से युक्त है।

रामावतार[11]

रामावतार का उद्देश्य मर्यादा और आदर्शों की स्थापना था। जीवन के हर क्षेत्र में वह उच्चशिखर पर दृष्टिगोचर होते हैं। वह सत्य–निष्ठ, प्रतिज्ञापालक, आदर्शपुत्र, पति, भाई, सखा तथा जितेन्द्रिय, संयमी, एक पत्नीव्रती तथा असुरता के शृत्रु थे। उन्होंने असुरता को हटाने व देवत्व की अभिवृद्धि हेतु जन्म लिया।

ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ में विध्न डालने वाले सुबाहु, ताड़का, मारीच आदि असुरों का दमन किया तथा यज्ञ परम्परा को यथावत चलने देने में सहयोग दिया। माता–पिता को प्रसन्न रखने की धर्म मर्यादा को देदीप्यमान रखने के लिये वन–गमन सहर्ष स्वीकार किया। भाई के साथ अन्याय करने वाले बलि को परास्त किया। ऋषियों को त्रास देने वाले खर–दूषण को दमित किया तथा अन्त में स्वल्प साधन युक्त होने पर भी रावण जैसे अधर्मी को परास्त किया।

इस प्रकार ऋषियों का मार्ग कंटकयुक्त करने वाले अधार्मिकता के कुमार्ग पर चलने वाले असुरों का नाश करने में संघर्षरत रहे तथा अपने उज्ज्वल चरित्र द्वारा प्रकाशित रहे।

रामावतार का ग्रन्थ चित्र एक ही प्राप्त होता है। इस चित्र में राम–सीता सिंहासन पर बैठे हैं पीछे लक्ष्मण खड़े हैं तथा सामने हनुमान जी हाथ जोड़े खड़े हैं। भगवान राम हनुमान जी को आशीर्वाद दे रहे हैं। यह चित्र जोधपुरी शैली में चित्रित है। इस चित्र में लाल, पीले रंग का प्रचुर प्रयोग है इसके अतिरिक्त रामदला की पड़ में भगवान राम धनुष हाथ में लिये चित्रित किये गये हैं।

कृष्ण अवतार

भगवान के इस अवतार से पूर्व वातावरण में असुरता छाई हुई थी। कंस को आकाशवाणी द्वारा ज्ञात हुआ था कि देवकी पुत्र उसका काल होगा इसलिये वह देवकी को कारागार में रखकर उसके नवजात शिशुओं को मार देता परन्तु भगवान कृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ और वह गोकुल में बढ़े। गोकुल में बड़े होने पर उन्हें कंस द्वारा प्रेषित तृणासुर, वत्सासुर, पूतना आदि असुरों का वध करना पड़ा। कालियादमन लीला व रास लीला की। थोड़े बड़े होने पर अन्यायी शासक कंस को श्री कृष्ण ने मारकर सुराज्य की स्थापना की तथा युवा होने पर महाभारत की योजना की तथा स्वयं पांडवों व अपनी सेना को कौरवों को देकर युद्ध कराया जिसमें पांडव विजयी हुये क्योंकि अर्जुन के सारथी स्वयं भगवान थे जो लोक कल्याण व धर्म रक्षा में लिये अर्जुन के सारथी बने थे।

भगवान कृष्ण ने धर्म राज्य स्थापित करने में सम्पूर्ण जीवन बिताया। भगवान कृष्ण अवतार में चित्र कृष्णदला की पड़, रामदला की पड़ व पाबूजी की पड़ में दृष्टव्य होते हैं परन्तु अवतार चित्रों में कृष्ण अवतार का एक चित्र है जिसमें भगवान कृष्ण मोर मुकुट पहने कमलासन पर, हाथ में मुरली लिये हुये सुशोभित हैं। उनके वाम अंग में राधिका सुशोभित हो रही हैं। पृष्ठभूमि में गाय चित्रित है। कृष्ण भगवान के पीछे प्रकाश–पुंज है। इस चित्र में भगवान ने लाल धोती व राधिका ने हरा घाघरा व लाल मिश्रित बैंगनी चुनरी ओढ़ रखी है। दोनों मुक्तामालाओं से अलंकृत हैं यह चित्र जोधपुरी शैली का है। इस चित्र के अतिरिक्त एक अन्य चित्र भी कृष्णावतार का प्रतीत हो रहा है क्योंकि इस चित्र के आगे भगवान विष्णु चतुर्भुज रूप में हैं पीछे बलराम हल लिये हुये चित्रित हैं।

बुद्धावतार[12]

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व जब स्वेच्छाचार एवं उच्छृंखलता की भ्रष्ट भावनाएँ चारों ओर फैली हुयी थीं तब बुद्ध भगवान का जन्म हुआ युवावस्था में भगवान बुद्ध ने कठोर तपस्या की व आत्मबल संग्रह किया तत्पश्चात उन्होंने प्रचलित अनाचार का डटकर विरोध किया। उन्होंने हिंसा के स्थान पर अहिंसा, मूढता के स्थान पर विवेक, भोग के स्थान पर त्याग को प्रधानता दी। उनके द्वारा प्रतिपादित सत्य से तथा उनके उज्ज्वल चरित्र से प्रभावित होकर अंगुलिमाल जैसे दुर्दान्त दस्यु तथा अम्बपाली जैसी चरित्रहीन नारियों ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया तथा उनकी तीन प्रतिज्ञाएँ ''बुद्धं शरणं गच्छामि, धर्मं शरणं गच्छामि, संघम् शरणं गच्छामि'' को ग्रहण कर अपना जीवन धर्म संस्थापन के लिये उत्सर्ग किया। अतः भगवान बुद्ध अधर्म का नाश करने व धर्म संस्थापना हेतु इन तीनों संदेशों से जन भावना को ओत–प्रोत करने अवतरित हुये थे।

इस अवतार पर आधारित कोई भी चित्र प्राप्त नहीं होता है एक चित्र राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी में उपलब्ध है भी परन्तु वह जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है।

कल्कि अवतार[13]

भगवान का यह अवतार अभी हुआ नहीं है अपितु कलियुग के अन्त में होगा जब सत्य, दया, क्षमा, सहानुभूति, पवित्रता आदि गुणों का लोप हो जायेगा। तब धर्म और साधुता की स्थापना के लिये भगवान अवतरित होंगे। भविष्यवाणी के अनुसार उनका जन्म विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर होगा और वह जहाँ–जहाँ जायेंगे वहाँ पवित्रता और सात्विकता का वातावरण होगा और तब सतयुग आरम्भ होगा।

अतः कल्कि भगवान दुष्चरित्रता, पाखण्ड, कपट के विरुद्ध शक्तिशाली अभियान कर कलियुग के प्रभाव को नष्ट करने की योजना में सफल होंगे।

इन प्रख्यात अवतारों के अतिरिक्त भगवान के और भी अनेक अवतार हैं। भगवान धनवन्तरी ने प्राणियों को निरोग बनाने के लिये अपना जीवन उत्सर्ग किया वे अमृत का घट हाथ में लेकर आये और कष्ट पीड़ितों का दुख दूर करते रहे। धन्वन्तरी अवतार के चित्रा में भगवान धनवन्तरी बैठे हैं। उनके पीछे पीला प्रकाश–पुंज है समीप ही दो अमृत कलश रखे हैं। पृष्ठभूमि में अलंकारिक वृक्ष है व पृष्ठभूमि हरी है तथा आकाश में बादल हैं इस अवतार के अतिरिक्त व्यास अवतार व नारदावतार भी धारण किया। व्यास अवतार का चित्र प्राप्त होता है। तत्पष्चात हंसावतार धारण किया जिसमें हंस के रूप में भगवान ने योग, ज्ञान और आत्मतत्त्व को प्रकाशित करने वाले भागवत धर्म का उपदेश दिया जो केवल भगवान के भक्तों को सुगमता से प्राप्त होता है। इस अवतार के चित्र में एक घेरे में हंस बैठा हुआ है[14] उसकी चोंच में माला है तथा वह ब्रह्मा को उपदेश दे रहा है।

इन अवतारों के अतिरिक्त दत्तात्रोय, नर–नारायण, कार्तिक, चक्रपाणि, हयग्रीव, पृथु आदि के अवतारों की गणना भी चौबीस अवतारों में की जाती है परन्तु हयग्रीव का एक चित्र प्राप्त हुआ है। जिसमें भगवान हयग्रीव चतुर्भुज रूप में हैं तथा शीश घोड़े का व शरीर मनुष्य का है इनके एक हाथ में वेद है। नीचे एक असुर लेटा है जो उनसे युद्ध कर रहा है। पृथु अवतार के दो चित्र प्राप्त होते हैं। जिसमें प्रभु आसन पर बैठे हैं तथा सामने एक गाय है तथा दूसरे चित्र में भगवान पृथु आसन पर हैं व सामने कोई याचक बैठा है। इसी तरह अवतारों में यज्ञ को भी अवतार रूप माना जाता है। उसकी मनुष्य जैसी लीला

नहीं होती परन्तु अपने तेजस्वी, प्रकाशवान, ज्वलनशील रहने के कारण वह अपने समान बनने की प्रेरणा देता है। यज्ञावतार के चित्र में नीचे यज्ञ भगवान हैं तथा एक तपस्वी मन्त्र पाठ कर रहा है पीछे एक विशाल अलंकारिक वृक्ष है। अतः अवतारों का सार तत्त्व यह कि अपने आन्तरिक एवं बाह्य वातावरण में व्याप्त आसुरी प्रवृत्तियों से हार ना मानकर निरन्तर संघर्ष करते हुये ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' को अपना उद्देश्य मानना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *श्रीमद भागवत गीता*–अध्याय चतुर्थ–श्लोक 70, गीता प्रेस, गोरखपुर। ''यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः, अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।'' 17/4 परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्म संस्थापनार्थाय समभवामि युगे–युगे।
2. *विष्णुपुराणम्*–महर्षि वेदव्यास 18/4 प्रणीतं, श्री धरस्वामिक्रतात्म प्रकाशाख्ययाख्यया भूषितम्, दिल्ली, पृ0 **83**
3. वही, पृ0 **85**
4. (क) *शतपथ* ब्राह्मण–1/8/1/1–6
   (ख) गौतम, डॉ0 चमनलाल, *'विष्णु रहस्य'*, देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप, भाग 1, बरेली, उ0प्र0–1967, पृ0 **453–459**
5. *मत्स्य पुराण* अनुवादक, श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री काव्य तीर्थ साहित्य रत्न, संवत् 2003, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण 1000
6. *संस्कृति संजीवनी*–श्रीमद् भागवत एवं गीता पं0 श्री राम शर्मा आचार्य वाड्मय, मथुरा–पृ0 **1. 13–1.14**
7. *वराहपुराण,* अध्याय 36, 140
8. (क) *श्रीमद् भागवत महापुराण,* भगवान वेदव्यास कृत, 7/8, गोरखपुर पृ0 सं0 **400–403**
   (ख) *विष्णु पुराण* अंश–17, अध्याय 17–20
9. *श्रीमद् भागवत सुधासागर*–(शुक सागर) 8/17–23/भाग वेदव्यास कृत का अनुवाद–गोरखपुर पृ0 **465–477**
10. अग्निपुराण, अध्याय 3 में इसकी विस्तृत कथावस्तु है
11. पदमपुराण, उत्तरखण्ड–269/94–95
12. गौतम, डॉ0 चमनलाल– *'विष्णु रहस्य'*–देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप भाग–1, बरेली उ0प्र0, 1967, पृ0 सं0 **491–493**
13. (क) *महाभारत वन पर्व,* अ0–190
    (ख) *ब्रह्म पुराण*–अध्याय–213
14. हंसावतार चौबीस अवतार–22, राजस्थानी शोध संस्था चौपासनी, जोधपुर अवतार सं0–17